

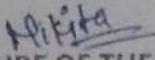
## INDIRA GANDHI NATIONAL OPEN UNIVERSITY

Assignment Submission for Term-End Exam June-2024ENROLLMENT NUMBER : 

2	2	5	4	7	0	3	0	8	2
---	---	---	---	---	---	---	---	---	---

NAME OF THE STUDENT : NIKITA CHAUHANSTUDENT ADDRESS : Akbarpur, Baharampur, Ghazipur, UPPROGRAMME TITLE & CODE : MHD ; Master of Arts(Hindi)COURSE TITLE : Hindi SahniCOURSE CODE : MHD-IIREGIONAL CENTRE NAME & CODE : 07; Delhi 1 (Mahan estate, (South Delhi))STUDY CENTRE NAME & CODE : 0710; Deenbandhu College (710)MOBILE NUMBER : 

7	3	0	3	8	2	2	4	1	2
---	---	---	---	---	---	---	---	---	---

E-MAIL ID : nikitachauhan7838@gmail.comDATE OF SUBMISSION: 28-04-2024(SIGNATURE OF THE STUDENT) 

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय  
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली - 110068

**Indira Gandhi National Open University**  
**Maidan Garhi, New Delhi - 110068**



IGNOU - Student Identity Card

Enrolment Number : 2254703082

RC Code :

07: DELHI 1 (MOHAN ESTATE (SOUTH DELHI))

Name of the  
Programme :

MHD : MASTER OF ARTS (HINDI)

Name :

NIKITA CHAUHAN

Father's Name :

VEERPAL SINGH CHAUHAN

**2254703082**

Address :

HOUSE NO 186 GALLI NO 2 , BUDH VIHAR

AKBARPUR BAHARAMPUR

GHAZIABAD GHAZIABAD UTTAR PRADESH

Pin Code :

201009

Instructions :

1. This card should be produced on demand at the Study Center, Examination Center or any other Establishment of IGNOU to use its facilities.
2. The facilities would be available only relating to the Programme/course for which the student is registered.
3. This ID Card is generated online. Students are advised to take a color print of this ID Card and get it laminated.
4. The student details can be cross checked with the QR Code at [www.ignou.ac.in](http://www.ignou.ac.in)



Nikita  
Chauhan

Registrar  
Student Registration Division

एम. एच. डी.-11  
 हिन्दी कहानी  
 सत्रीय कार्य  
 (सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.-11  
 सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.-11 / टी.एम.ए. / 2023-2024  
 कुल अंक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए: 10x2=20

(क) शकलदीप बाबू एक—दो क्षण चुप रहे, फिर दाएं हाथ को ऊपर—नीचे नचाते बोले, “फिर इसकी गारंटी ही क्या है कि इस दफे बाबू साहब ले ही लिए जाएंगे? मामूली ए. जी. आफिस की कलर्की में तो पूछे नहीं गए, डिप्टी कलकटरी में कौन पूछेगा? आप में क्या खूबी है, साहब, कि आप डिप्टी कलकटर हो ही जाएंगे? थर्ड क्लास बी. ए. आप हैं, चौधीसो धंटे मटरगश्ती आप करते हैं, दिन—रात सिगरेट आप फूंकते हैं! आप में कौन—से सुखाब के पर लगे हैं, जनाब? भाई, समझ लो, तुम्हारे करम में नौकरी लिखी ही नहीं। अरे हाँ, अगर सभी कुकुर काशी ही सेवेंगे तो हंडिया कौन घटेगा? डिप्टी कलकटरी, डिप्टी कलकटरी! सच पूछो, तो डिप्टी कलकटरी नाम से मुझे धृणा हो गई है! और उनके होंठ विचक गए।

(ख) मैंने देखा, मुझसे ज्यादा वह प्रसन्न है। वह कभी किसी का एहसान नहीं लेता, पर मेरी खातिर उसने न जाने कितने लोगों का एहसान लिया। आखिर क्यों? क्या वह चाहता है कि मैं कलकत्ता आकर रहूँ उसके साथ, उसके पास? एक अजीब—सी पुलक से मेरा तन—मन सिहर उठता है। वह ऐसा क्यों चाहता है? उसका ऐसा चाहना बहुत गलत है, बहुत अनुचित है!... मैं अपने मन को समझाती हूँ ऐसी कोई बात नहीं है, शायद वह केवल मेरे प्रति किए गए अपने अन्याय का प्रतिकार करने के लिए यह सब कर रहा है! क्या वह समझता है कि उसकी मदद से नौकरी पाकर मैं उसे क्षमा कर दूँगी, या जो कुछ उसने किया है, उसे भूल जाऊँगी? असम्भव! मैं कल ही उसे संजय की बात बता दूँगी।

(ग) उसने भी है समेट ली। मेरी आँखों में आँखें डालकर उसने कहना शुरू किया: “जो आदमी आत्मा की आवाज कभी — कभी सुन लिया करता है और उसे बयान करके उससे छुट्टी पा लेता है, वह लेखक हो जाता है। आत्मा की आवाज जो लगातार सुनता है, और कहता कुछ नहीं है, वह भौला—भाला सीधा—सादा बैवकूफ है। जो उसकी आवाज बहुत ज्यादा सुना करता है और वैसा करने लगता है, वह समाज—विरोधी तत्वों में यो ही शामिल हो जाया करता है। लेकिन जो आदमी आत्मा की आवाज जल्दत से ज्यादा सुन करके हमेशा बैचैन रहा करता है और उस बैचैनी में नीतर के हुक्म का पालन करता है, पागल है। पुराने जमाने में सन्त हो सकता था। आजकल उसे पागलखाने में डाल दिया जाता है।”

2. 'बदबू' कहानी का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। 16
3. एक कहानीकार के रूप में मोहन राकेश का मूल्यांकन कीजिए। 16
4. 'ड्राइंग रूम' कहानी में अभिव्यक्त जीवन दर्शन को स्पष्ट करते हुए उसकी कथा संरचना पर प्रकाश डालिए। 16
5. 'सुख' कहानी के कथ्य का विश्लेषण कीजिए। 16
6. दलित साहित्य की अवधारणा पर प्रकाश डालते हुए 'सिलिया' कहानी के महत्व की चर्चा कीजिए। 16

८८.८-८.८.-।।

## हिन्दी नृत्यानी

१०. विभिन्नालिखित में से सभी की संरक्षण आदेत व्याख्या कीजिएः  
 (क) शाकाल्दीप भवु - सोच विवरण ग्रन्थ  
 - शाकाल्दीप भवु

प्रस्तुत ग्रधार्ण नवी जाती के १९७९-८० वर्षान्त ।  
 अधिकांश जी ने द्युप्रासीष्ट नृत्यानी डिप्टी अलेक्ट्रो से अवतरित  
 है। इस प्रकार भवु में शाकाल्दीप भवु जी अपने हटे नारायण भवु  
 को डिप्टी अलेक्ट्रो बनाने उत्कृष्ट। इसके लिए उन्हीं नवी  
 प्रीक्षा; ३०२ अंतरः विचारग्रन्थ परिलक्षित करी हैं।

व्याख्या

बहु शाकाल्दीप भवु के सहे नारायण भवु डिप्टी  
 अलेक्ट्रो की प्रीक्षा में प्राप्त ही हो पाते हैं; तो उनके प्रिताजी  
 का व्यर्थ छुट जाता है। शाकाल्दीप भवु दाहिने हाथों से इमारा जारी  
 हुआ जाता है कि इस भवु आप प्रीक्षा में प्राप्त हो ही जाओगे इस  
 भवु की क्या गाँठी है। बहु आप मामूली ए.पी. डाकिस जी  
 अलेक्ट्रो में तो छूड़े नहीं गए, आप डिप्टी अलेक्ट्रो में आपको मामा  
 जान छूड़ेगा? आप में क्या रखती हैं कि आप डिप्टी अलेक्ट्रो  
 जन ही जाओगे? अपने बी.डी.एजाम भी वह ज्ञानसे प्राप्त  
 किया। चौथी घंटे अर्कानी जाते हुए सभय जो बहुदि जाते  
 हैं; दिन-रात शिगरेट फूँकते हैं। आप में जान-सी ऐसी विवरण  
 प्रतिभा है। जिसके जारी सफाल हो जाओगे? अट्टी तरह सभय  
 लोगिन आपकी किस्मत में नीकरी नहीं लिखी है। दूसरा  
 उदाहरण देते हैं कि अर्थे ही अगर आप कुकुर जानी ही

तो दैडिया कौन चहेंगा? अधिक ज्ञ भव लोग संप्रयोग ही हो जाएंगे तो अभावों में कौन रियोगा। डिप्टी कलेक्टरी, डिप्टी कलेक्टरी भव धर्मों तो डिप्टी कलेक्टरी नाम से अब मुझे लकरत होने लगते हैं। पहले उद्देश्य-उद्देश्य शास्त्रीय भव ने मनोविज्ञान लदल गई और उसे नामाख्यान भव को डिप्टी कलेक्टरी कराने का आशा विश्वास में परिवर्तित होने लगा।

## विशेष

- ① महायज्ञ की विवरणाओं जा पर्याप्त।
- ② आभ भजन-धारा के बाबों जा इतिहास।
- ③ आमा और विश्वास के साथ साथ मीदमंग की इतिहास।
- ④ पारिवारिक मनोवृति और परिवर्तित जा विवरण।
- ⑤ धूत वाच्य और मुद्दावरों के भाव्यभ से प्रस्तुति।

## प्राचीनिकता

अमृकांत जी द्वारा रचित डिप्टी कलेक्टरी किसी भूग के प्रतिक्षा था मीदमंग की ज्ञानी बही है। आपकु तकनालीन धूत के वास्तविकता की ज्ञानी है। डिप्टी कलेक्टरी किसी पाही की ज्ञानी नहीं है। ये एंकार धूरे समाज थे और आभ की जने छुआ हैं।

शास्त्रीय भव नहीं एक धर्म वाद वापस लाई। धर्म में प्रवेश करने के दृष्टि उद्देश्य आसारे के कमरे में जाँका, काँड़ी भी मुवाकिले नहीं था और मुद्दरिय साहस भी गायब थे। १९ अगस्त चले गए और अपने कमरे के सामने आसारे में रखे हुकार बंदर जी आंति और मलकार-मलकार ३०६१ रखोईधर जी और देवता।

उबकी पत्नी भमुना, पाके के पास पहुँच होठ-पर-  
होठ दमात मुँह फुलार तरकारी लग रही है। १६ अद्य-अद्य  
मुस्काते हुए अपनी पत्नी के पास-पल्टे गाज़। उनके मुख  
पर आसाध्या १०८ संतोष, विश्वरूप १०८ डल्साह जा भाव-आंकित था  
जब गणलदीप भट्ठ के लिए लारायण भट्ठ उपरी लकड़करी की  
परीक्षा में पास नहीं हो पाते हैं, तो उनके पिताजी जा धर्मदृढ़  
जाता है।

गणलदीप भट्ठ दाढ़िये धार्मिक इश्वरार्थ करते हुए लहरे हैं कि  
अहं भर आप-परीक्षा में पास हो गाज़, अन उपरी लकड़करी में  
आपको भ्रमा लाना चाहिए? आप में क्या रुक्षी हैं कि आप उपरी  
कलकाटर कल ही जाएंगे। अपने बी.ए.एजाम भी उर्दू कलास  
में पास किया। यांची लंगे मत्रजगती लगते हुए सभय  
को लवधि करते हैं, दिन-रात ऐगरेट खुकते हैं। आप में अन  
भी ऐसी विलक्षण प्रतिभा है जिसके नाम सफल हो जाओगे?  
अधिक १२४ समझ लीजिए आपकी किमत में नीकरी नहीं  
लिखी है। क्ये इन ३६४१० दर्ते हैं कि अरे हाँ अगर भभी फुक्कर  
जाएंगी ही भेंगे तो हाइया जान घटेगा। अपति-जब जब लाठ संपन्न  
ही हो जाएंगे तो अभावों में जीन लिखेगा। उपरी लकड़करी, उपरी  
लकड़करी! अप छुट्टे तो उपरी लकड़करी लाभ से अब मुझे  
क्षमत दीने लाए हैं। यह गहरा-गहरा गणलदीप भट्ठ भी  
मनोदमा ल्पल गई और लंगे लारायण भट्ठ को उपरी लकड़करी  
ज्ञान का आशा निराशा में परिवर्तित होने लगी जब जब  
जीन संपन्न ही हो जाएंगे तो अभावों में जीन लिखेगा। उपरी  
लकड़करी, उपरी लकड़करी। अप छुट्टे तो उपरी लकड़करी लाभ  
से अब मुझे ज्ञान होने लगा है।

(२७) भैने देखा, - बात बता दूँगी।  
सोनम प्रसंग

प्रसुत ३१९५० साल में जो अद्वितीय घटना हुई थी उसका इसका अधिकारी भव्य गंडारी जी प्रब्रजिवर्मी जोहरी वही था जो हुए से उद्धारित है। ये पांचवें दीपा नाम की एक दिसंगी जो अंतर्दृष्टि की आजीविका जाती है, जो अपने वर्तमान प्रेषी संभवा और इसकी प्रेषी विशेषता के प्रति असंमजस की विशेषता में है।

८४/२०४

दीपा धर्म परिवार के विवेचन का पर्दा लिया जुटा है। वह शोध करने के लिए जातपुर आती है। यहाँ उभाग परिवार संघर्ष से दुआ दीर्घ-दीर्घ याद परिचय प्रेम में परिवर्तित हो गया। इसके बारे में यह तांत्री के सिलसिले के जोखिया जाती है। यहाँ उसकी मुलाकात अपने पहले प्रेषी विशेष से होती है। १९८४ दुर्शानी रोमानी समृद्धि में खां जाती है। दीपा के देखा की उसके ज्यादा प्रस्तुत विशेष है। यद्यपि १९८४ जमी लियी जा पड़सात ही लेता किए भी उसने दीपा की अद्द के लिए जो जाने किए लोगों की सहायता नहीं। आखिर उसके दिसां क्यों किया? जात वह यादता है कि मैं उसके साथ यही जोखिया में दूँगी। उसका सोचकार ही मेरा तड़ा-मठ जो समझाते हुए जाती है उसकी जोई जात वही छाँटी, शाखा १९८४ में ऐसा भी प्रति जिसे आपने गांग आपने अव्याय जो प्रतिलाभ जाने के लिए यह यह भर जा दिया है।

अब विशेष समझता है कि उसकी अद्द से नानी पाणी में उसे क्या जा रहा हूँगा यह उसने पहले जो छुद जिया उसे अब जाकेगी तो यह असेहा है। मैं न जमी जिलाला बात

किताब लें। की अद्वितीय या असंख्य अनेक वर्षों से इसका उपयोग  
प्रथम प्रृष्ठा चाहिए है कि मैं उसके आधुनिक अवलोकन के लिए  
विभा शोधकार द्वारा गेश तत्त्व-भौतिक विद्या है। इसका विद्या  
प्राचीन लक्ष्य ही गणित और अनुप्रयोग है। किसी विद्या अपने लक्ष्य को  
अनुप्रयोग के लिए लाना चाहिए है जिसकी लाभ उत्तम हो। आधुनिक विद्या का  
भी अपनी विद्या विद्या का अनुप्रयोग है। अतः विद्या का अनुप्रयोग के लिए  
चुनौती देना चाहिए। अगले विद्याएँ अनुप्रयोग हैं कि उनकी अवधि  
में विद्या विद्या के लिए उपयोग हो सकती है। इसके अनुप्रयोग  
को लक्ष्य लिया जाना चाहिए। तो यह अंशमात्र है। अब  
कठीन विद्याएँ उत्तम अनुप्रयोग और वह ही अपनी विद्या का अनुप्रयोग है।  
वाल ही उसे अपने विद्याएँ प्रोत्ता अनुप्रयोग के लिए भी उत्तम अनुप्रयोग।

### विशेष

- ① धरणों विवर - छह अंक संख्यों के विवरणों की प्रक्रिया।
- ② भूगोल का विवर एवं अंकोंवाले के विवरण इसी कीट्रिया  
व्यापारिक व्यवस्था।
- ③ लक्ष्य भूगोल एवं आनंद भूगोल अनुप्रयोग।
- ④ अनुप्रयोग एवं अनुकूल आनंद अनुप्रयोग।

### प्रासंगिकता

ये पांचियों पंक्तियां धरणों को आवश्यकीय एवं अनुप्रयोग के  
अनुप्रयोग देखने की लाइन के अनुप्रयोग की संवादी के आधुनिक  
कठीन है। प्रतियों के विवरणों की संवादी कीट्रिया की  
विवरण एवं साक्षात्कार विवरण त्रुटी विवरण की  
अपनी विवरणों को विवरण के लिए विवरण की

(2)

'बद्रू' गदानी का प्रतिपाद्ध स्पष्ट कीजिए।

- 'बद्रू' गदानी एक 2022वाले में जाम करने वाले शारीरों की जिंदगी पर आधारित है, इस 2022वाले में जाम नहीं वाले कई शैली के लिए जिनमें मजदूर, जिन्हीं, कोरमेन, सर्विस और साथ राजी हैं। इस गदानी का मुख्य पात्र धूरे दीशी द्वारा में रहता है; उसे बद्रू द्वेषा महसूस होती रहती है। हिंदी गदानी में 'धन वर्ग' लक्षी गदानी की महत्वपूर्ण भारतीय अभिव्यक्तियों के लिए आता जाता है। हिंदी गदानी में लक्षी गदानी अंगोलन तमाम पहलुओं को आते में अभिट्ठे हुए चलता है। यह स्वाभीन भारत के लक्षणों परिवेश, चुना महत्वपूर्ण छंग डनसे खुड़े सपनों तथा लक्षणों सामाजिक - राजनीतिक उपल - पुरुषों का जीवंत दर्शाव फैलता है।

गदानीका - 2022 जोड़ी का जाम लक्षी गदानी द्वारा में अनुग्रह है। 2022 जोड़ी उत्तर - दुर्लिंदा गदानीकारों में से एक है, जिनकी कथा याता में प्रांग र्दे लेकर उत्तर तक विश्व देशों जा सकता है। उपनी गदानीयों में के पहाड़ों के भौतिक दृश्यों के साथ उनके पीछे दुपी गरीबी, संघर्ष, लेखणगारी तथा जातिगत समियों को परत दर्शाते स्वाभीत चलते हैं। एक तरफ उनका कथा संसार पवारी इलाकों के संपर्क को फैलता है तो दूसरी तरफ शोषित और जुँड़ित तथा जातिगत समियों को परत दर्शाते हैं। दुपी गरीबी, संघर्ष, प्रांग से लेकर दृष्टांश्चा से भई अंधीगिर के मजदूर वर्ग के जीवन को दर्शाता है। 2022 जोड़ी जी गदानीयों शहरी - ग्रामीण जीवन, वर्ग - संघर्ष, आर्थिक - सामाजिक - नेतृत्व अंगठी, जातिगत - राजियों, पलायन तथा शामिल जीवन जो 2022 देती हैं।

वे अधिकारीकूपि पर गतिशील और विस्तार से लेखने का ले  
 अभियंता : पहले लिपाना है। उसके बाद उसके लिए लिपिकृत का जीवन देखा,  
 भोग और जिथा है जहाँ तक वह लाभित्र से सब लिपों में  
 शाजिक जीवन के संघर्ष को वे प्रस्तुत करते हैं। इन लक्षणों  
 में बहुत, बहुत, भीड़ियाँ, आखिर दुकान आदि भूमियाँ हैं। इन लक्षणों  
 के लिए लक्षणों के उत्तर पात्रों को आधार बनाया है जो विना  
 आभाजिक - आपिकूपि पृष्ठभूमि के पात्र हैं; तथा इन पात्रों की  
 विवरणाता, पृष्ठा और संघर्ष को कवाती में विविध लिखा है।

## अद्वैत ज्ञानी का प्रतिपाद :-

शोभन खोड़ी ने बहुत ज्ञानी  
 में शाजिक, कारीगर, मग्नित, भाट्टियाँ और आमिल के जीवन की जीवन  
 और उनकी व्यवहार तथा मालिक व असरों से उनके उत्कर्ष  
 को भूमि २०५ से प्रस्तुत किया गया है।

## मधुरी के विविध लक्षण :-

बहुत ज्ञानी के  
 माध्यम से मधुरी की परिचयिता को जताया। लार्याम्पल ५५  
 मधुरी के साथ लिखा तरह का व्यवहार किया जाता है। कि  
 ज्ञानादि में मधुरी की तबाही भलोकल तोड़ने के लिए होती है।  
 यह ज्ञानी अवेदन के सत्र ५२ तक कारी ही है। इस ज्ञानी  
 में दिलाया गया है कि इंजीवाद कार्य अभ्युक्ता में मुख्याद्वय  
 के आध्यम के क्षेत्र विन डाका जाता है। यह ज्ञानी द्वयिता  
 है। एक मधुरी की भी विविध इतनी अधीरी नहीं है कि वे  
 अपनी गँकारी को डोकर मार सकते हैं।

कर्मी विषयाता को एक मुख्य अपने बाबू में व्यक्ति करते हुए  
कहते हैं "नौकरी में तो नौकर की ही जैव जैविक हार्दिक।"

### श्रमिकों की जीवन संली का मार्शिक प्रयोग :-

वद्य कहाती

एक जात्याते में जाभ करने वाले श्रमिकों की जिद्दी ५२ आवार्ड तहि है, इसमें जात्याते में जाभ करने वाले इस श्रेणी के लोग हैं जिनमें भेदभाव, जिस्ती, कौरबान, सर्वित और आहव सभी हैं। इस कहाती का मुख्य पात्र है शिवायकास में १६ता है; उसे वद्य द्वया भद्रसुस होती रहती है। वही वद्य व्यक्ति की जिजीविता। इस संघर्ष की प्रतीक भाष्यम् होती है। जब तक १४ भद्रसुस होती है तब तक संघर्ष की गुणाधर्म है, जीवन प्राप्ति ५२ है तथा मात्रीय संवेदन बढ़े १६ते का संकेत है।

"एक जर दाध अवधी तरह थो लते ५२ उसने उन्हें  
लाफ ला ले जा कर खुदा, कैरोसीन की गंद अभी  
छुटी नहीं थी तुकरा भाषुक से थो लते ५२ भी उसे  
विसे ही गंध का आभास हुआ किए एक लर और भाषुक  
धूल से निकालकर उसने धाढ़ी में भलगा चुक और दिया।"

### अभाज और ५२५१२ से अलगाव का लिये :-

आभगारी को परिवार, अभाज ए परिवेश से अलगाव का  
लोक वद्य कहाती है। इस कहाती के माध्यम से  
लेकिन ने यह जाताने की लोडिंग की है कि अभाज और  
परिवार से अलग हुए आभगारी की व्यवहा उनके चेहरे  
५२ परिवारित होती है। "साथी लभगारी का दाहर ५२

परिलालित होती है। "साथी जामगारों के द्वारा पर असहित लगते और इनकी एक गहरी छाप भी, जो आपस में शांतियों या हँसी-मजाक के लिये नहीं भी उपयोग में लग पाती थी।"

### भवदूरों के संगठित होने का संकेत :-

१९७२ जून

'धारों की लिपि' में लिखिता जी तलाच, जोड़ वाले वाचाकाएँ हैं। 'लिपि' लिखने के लिये भवदूरों तथा मानिकों के रुचों की नहीं हैं, 'लिपि' प्रतीक भी है। जीवनी में प्रातिरोध है। जीवनी में ऐसा धुरा जामगार जोने द्वारा से कौशिक जी जंघ अस्तु लगता है। लिपि जी अपनी रुचाओं हैं। १९६५ - १९६८ तक यों जो जो जी जी जी है तो यह लिपि सकारी जी जी जी है। लिपि जीवनी में भवदूरों के अन्दर 'लिपि' के लाभों एक है। लिपि जीवनी में भवदूरों के संगठित होने का संकेत किया गया है जो अविष्ट में इनकी स्थिति को अवगत बना सकती है।

### बद्र के भाईयों से धुगीन संदर्भ में अभियोगीत :-

भवदूर संगठन जीवन के शुरुआती संकेत पर प्रवर्धन धारा वह लुप्तजीवन का धर्म तथा विश्वासा में विश्वरूप भवदूरों का भार्जिक वर्णन जीवा में लिलगत है। विश्वनाथ मियांडी इस जीवन के अंकर में लिपते हैं कि "लिपि" के इससाथ जो भर्जन और यह इससाथ की लिपि का लेख नहीं रह गया है, वैयाकी और अस्ते जीवन सामाजिक नीतिदासिक शृंखला भी जो जीवन और लिपि खाली है। ये तीन और अपेक्षा जो जीवन का अंत है।

बद्दु में बिला गुह किंवद्दने से देवता रहने वालों की भूमिका आधिक है। इसलिए बद्दुदार व्यवस्था बालती-कुलती रहती है। नवाकार शेषरुद्धि बद्दु में चुगिन संदर्भ को आक्रोश से बचा लाते हैं।

### आभाजिक अपार्थ का प्रेरणाकारः

बद्दु लाली में आमिलों के भाष्ट छोटे बाले गोभारा का तो निश्चल हुआ ही है बद्दु जी का पारिप्रेक्षण में उनकी आभाजिक और पारिवारिक स्थिति जो भी अपार्थ चिनाकांत किया जाता है, नास्तविक रूप में ऐसी स्थिति जिम्मेदार है जो उन्हें खातना लाते हैं जो अपार्थ नहीं देता है।

### मजदूर पर्व और आधारः

लाली छोटे-छोटे विवरणों में कई प्रेरणा प्रस्तुत की जा सकती है कि किसे मजदूरों को सनुक्कलित किया जाता है ताकि वे अफसरों की दिवायत पर दुकुम के आधिकरण से बच सकें। लाली में दिवाया जाता है कि किसे कारखानों में लाजी अस्सर लियरेण पीते द्योतते हैं किंतु आमिलों को लड़ी वीर जा अवा किया जाता है। प्रथम मजदूर अपनी राती जा रवानी दिल्ला राजमाने द्ये दिवायात और किस वाले दाघ के द्वारा तालामी देते ही मुद्दा में लड़ा हो जाता। गोद्दरा संघर्ष मजदूर जी द्याती, लम्बर और लक्की को दिल्ला आज उह जाँ जा संज्ञा लाए देता। कारखानों से उह लियरते वक्त जी आमिलों की चेहिंग द्यती है और उक मजदूर अफसरों के इस अभावीय व्यवहार के प्राति रिक्षान देता है — “सालों जो शक रहता है कि हम तंगी के साथ गुहे लौटे ले जा रहे हैं, इसीलिए जमी उद्धाल लूट जा रहा है और आज लाज है।”

इनका सर्व चले तो यह गौर तक हमारी लागत साथुओं की भी अरात बाहर आया तरेंग मधुर एवं ना भूषण विषय लेते हुए कदाचित् १९५४ त हैं जि कैसे सारे नियम द्वेष भूषणका पर चाहे जाते हैं ऐसे पर नहीं लगते तब उसे जी चुना दी जाती है

### मैदान की दुनिया और मुनाफे की दुनिया:-

दृष्टिकोण समारी यह दुनिया दो भागों में बंटी हुई है एवं ओर अपने मैदान लेके, अबाब और लक्ष्मण नाम यापन करने वाले लोग तो दूसरी ओर हैं इसी मैदान से मुनाफा लेके तभाब दुर्घ-सुखियाँ और और भिन्न-आवास में जीवन यापन करने वाले लोगोंको लानी भूमर रख दें इसी बात से दृष्टिगोदर जाती है।

विषयपत्र; यह खजाने हैं कि हिंदी साहित्य के अन्तर्मुखी दृष्टिकोण प्रगतिशील व्यवसाय शैक्षणिक भौगोलिक दृष्टिकोण में लगारीय एवं आवासीय जीवन की विवेदनाएँ व्यवसायी एवं विषयालाई का प्रयास किया गया है। लक्ष्मण शैक्षणिक जीवनी ने एवं किंवद्यों के भूमिकों के संघर्ष को दृष्टि, अपनी जीवनी में तेज, जीटी, कालिक एवं सन्देश भूमिकों की जिक्री जो १९५३ वर्षा अर्थ दे दिया। 'लक्ष्मण' जीवनी तलमें से एक है। लक्ष्मणी जी परिवार समाज एवं परिवर्तन से अलगाव जो अब ज्यादी 'लक्ष्मण' लाती है। इस जीवनी के अवधारण एवं लक्षण तथा जी जीवनी जी हैं कि समाज में छुपीदाद की लोग लिख लें से जी जीवनी जो व्याख्या नहीं है।

③ नेत्र अवासिकार के बाप शे. अदन शक्ति ना मूर्याकाल  
लोकियाँ |

हिंदू कपा आहियें और लगत किंतु विद्या के अद्दत  
सिवाकार अदन एकीकृत तेल चुम्बित आहियकारे मध्ये विविध  
कृ. विहंडे. 'दोषी गवाची लो अंदाल- 'लो अमृत शिवायक  
त भूतक भाव गवात है। विहंडे, अभाव लो को दिन, रो  
भूत अ दिनी लो पुरुले आऱ्युपिणी नांजा लिलोता। पुरुले  
मन्त्र-विधी लोकी कृ दूर मेर आदर एकीकृत लो विविध  
आलत है। समाजीले लोकालीकार युगांड युक्त राष्ट्र उंचि  
"विहंडी गवाची अंदाला ने दिनी लोकी लोकी खुशी विविध  
घडली है। उस दौर मेर दिन लोकाल अदल राष्ट्रकृ, लोकोवर.  
अंदर एकीकृत विहंडे। इत्युल लोकी विहंडे शोर राष्ट्र आले  
अ राष्ट्रकृ लो दोक्षां विविध अदल रहे।'

अदल नालेकृ आऱ्युपिणी विविध से भूतक शादियां घट  
लगत कोपार्क थे। विहंडे अपी आऱ्युपिणी बोआ रु शुल  
पुर दिनी आहियें लो नवीन दिक्षा विहंडे 'लोकाल', 'आ-वर्षा',  
'दिन औं-दिन', 'प्रयामा' लो लुत', 'क्षेत्रियित', 'आर्द  
अले लो शालिक्त आदि लोकालें ने दिनी लोकी ल  
परिवेश दी कहल दिखा। देव लोकी लुत अलेकृ, कै अर्द  
काद्याकार कै अप मेर विविध दुर्ग अलेकृ विविध दिनी कै  
विविध अतिआ अंपूल लोक विहंडे विहंडे शोर विविध  
दिक्षी लोकालीकृ मेर लो विहंडे विहंडे शोर विहंडे, विविध  
त आऱ्युपिणी भूतक ली विविध लो अल अ विहंडे  
आले गांड है। विहंडे ली विविध अदल ली कै लो लो - विहंडे  
लो विहंडे के अंदर जोकी आभ मेर विविध लो अदल दी  
विधी, दिन विविध अंदाल- अ-विविध

નાનાની બે લંગાં અન્ય-અન્ય તરફ બે રાણી કંપા - જુદી  
અન્યની મહિની વર્ષ હું 13થાં કલાકારીની મેળે આજત - વિજાળા  
ની પણ એકાં અંગત રૂપ મેળે અસીવાળ હું હા]

ચચ્છાતાંશ્વિની આજત ની પરિવર્ણન પરિચિત આર્દ્ધ  
દોષાંભૂતી હું બનાયુલી કે 30૫૮૦ વર્ષને આર્દ્ધ સાંજાન કા  
યેદીતિ ની આદાન એકાંત ની આખી લગ્નામણી એ ગુણગ  
ન ખાલીક રૂપ કે વિજિત ક્લાન હું વેળે કે અસીવાન,  
ખુલ, તલાલ, તેરાંગ, વિજાળ આર્દ્ધ ઢીઠાંગાન જ્ઞાન ગા  
નિજાન - અણી કલાકારીએ ની અદલાંગું દ્વારાયેદી હું  
3૬૯૫ાં અણાંગ આર્દ્ધ અંગાંન કે નાર્ગ રૂટ હું  
અન્યાં આર્દ્ધ પારિવારિક વિભિન્ન. એ પારિવારિ, ચંદ્રાંગો, એ  
એડાલ ત વિજાળ આદી ની પ્રગાળિન ના સે આશીર્વાત  
એડાલ ત આદાન એકાંક એ જાનિની. એ એદ એન ની  
જીથા હું આદાન એકાંક એ જાનિની. એ એદ એન ની  
આર્દ્ધ એકાંક હિન્દા હું કે "મુખ્ય એ તે વીઠે હું જીવા  
એદ એકાંક હતા એ આર્દ્ધ ન હી ચુંબી હું રિદ્દી ની કંદાળ  
પતા હું"

એજન્યાંઘ સમર્દ્યાઓ - એ ગાંગ ગાંગ એ આર્દ્ધ  
કાણાલિયો - એ પ્રાણર્દ્ધ જીવ હું હું તૃણાંતી જોડિયા લાંબિય  
એજન્યાંત ની આર્દ્ધ દ્વાર આર્દ્ધ પારિવારિન લેખિત લો ઉદ્ધૂલી પુસ્તક  
એજન્યાંત ની 3૬થાં કાણાલિય લો વિજાળ કાણાંગ હું | હુંનીં  
દ્વાર પારિવારિક સાંસ્કૃતાઓ ને આર્દ્ધ - ૧૧૭ હંસિયો ના  
વિજાળ, પતે - પતી લા અણાંગ, વિજાળન ની સાસદી,  
એદ એકાંક એ આદાન આર્દ્ધ કુદાઓ - ની એંગાળા મલ  
એદ એદ આજ પરિલાક્ષિત હોલી હું

आदत रहेता था कि नवाहिया में अमेरिकी क्रिकेट टीमोंने विजय  
 प्राप्ति की तरह ही शोधने के लिए आईटर्स पर आत्मप्राप्ति  
 विजय हुई, लेकिन याद की अप्रवाहित तथा आदेशंग भी  
 माना गया तो गहरा असर हुआ, बल इतना है। ३५८१-१९८८  
 क्रिकेट के "ग्रेट लड़ाकियाँ" युवा प्रोफेरेंस के लिए उत्तर  
 भौंवरों और विचारित होते हुए बरियारे के लिए अख्तिर्नाम की  
 गई गाथकी क्षेत्र ही खेलों की लोकप्रियता है।" गोदान  
 की जड़ दृष्टि लेनी के अधार असंज है। इसकी सहाती थी  
 कि दृष्टि अंदर के स्थलों के अवकाशे का अभाग होता  
 था अगला है। वे अद्यतागीच घरेल शैरू शैरू अवलो  
 के बातेलिये अपाराह आते जाते हैं। ३५८१-१९८८ क्रिकेट  
 और १९८८-८९ की युवा लो क्रिकेट की प्रमाणितता ५२  
 आपके लो क्रिकेट क्रिया | सामाजिक - २०११-१२ - आर्थिक  
 विवरण असी लोकिथा. मे अपारेंट लोकी है। आ०१८ वर्षों  
 की लोकी अलंकृत तो अलंकृत क्रिकेटिक ठोकी लोकी में  
 विवरण दें। अलंकृत एक दी लोकी अलंकृत लो क्रिकेट  
 क्रिकेटिक हो। एक दोस्त क्रिकेट में विवरण लो दोस्त १९८८  
 की लोकी है; उसे लोकी हो जो लोकों का ३५८१-१९८८  
 की लोकी है। अब अलंकृत एक दृष्टि के लिए की अपारे  
 घोले दी लोकी है। अब लोकों को लोकी हो वह लोकी  
 घोले घोलो के अलंकृत लोकी हो वह लोकी हो वह लोकी  
 आ०१८ दी लोकी हो अपारेंट दोगे कि अपारित लोकों का  
 लोकों का अपारे है। अपारेंट लोकों का अपारे है। अपारे  
 लोकों की लोकी अलंकृत तो अलंकृत। विजयाकार की तात्त्विक शार्ट  
 लोकों के लोकों को अलंकृत अलंकृत लोकों में पूछ लोकी है।

जाहिं हैं कि भाषावी के बाद के १९८५ सताती समाज ना महुत बड़ा तरफा आज भी उस दर्द से उत्तर तक पार्था है और गहरा है वह टीस बदस ना उग्र रथ भी खारा न लेती है। मलवे ना भालिक, निःशक्ति नी कालातीत बाजियेंभाए हैं।"

आहियनार मोहर राकेश नी ज्ञातियों संबंधो के बहलते समीक्षण और विकल्प नी तलाड़ जाती है। संयुक्त परिवारों के विधर्व और इन्होंने परिवारों के १९८८ की चुनी शहरीकरण, आजीविज्ञा और राजगार ने जारी जारी जीवन आरु संबंधों के अस्तुष्ण ने बल दिया। इसी बहली हुई विषय को मोहर राकेश नी ने एक और जिक्री, सुदागिर, काँड़ाद, का आकांक्षा आदि ज्ञानियों के माध्यम से आजियेंभात किया। मोहर राकेश नी ज्ञानी स्वतंत्र भारत के भव्यपर्याप्ति के व्यक्ति के जीवन के लाले उपरे विविध रंग प्रस्तुत जाती है। देवा विभाजन, आतंक और असुरक्षा, अर्थतंत्र, भीक्षातंत्र, विधान और शाखाओं, पालियों ना काशलाएं, ग्राह राजवीति और लोकरुही आदि अनेक विषय उच्छ्रीत अपनी ज्ञानियों के माध्यम से ड्यूस्पित किया है। कल्पल, मलवे ना भालिक, उत्तर हुआ चारू, मंत्री, घासपर और खानार, लर्य अदल आदि इस विषयों से संबंधित नी छछ विझील-ज्ञानियों हैं। मोहर राकेश नी शहरी संवेदना और असुरक्षित मध्यवर्ग के प्रतिनिधि लोकों के रूप में पहचाना जाता है। सुप्रापुष्टि समीक्षा डॉ. बृद्धन लिंग हिंदी आहियन ना इतिहास में जात है कि "मोहर राकेश नी ज्ञानियों नासद-तनाव नी ज्ञानियों हैं, उत्तमा सरा साहिय तनाव और अंतर्दृष्टि से भरा पड़ा है।"

उनके पात्र नामक ऐसी परिस्थितियों में होते हैं, जो उन्हें दूषकों के दृढ़ रुपों द्वारा होते हैं। मलबे जा मालिक को हो लें पुरुषों की आखत विभाजन से उपर्युक्त परिस्थितियों पर अधिक हैं। मलबे उनमाद और वहशीपन जा प्रभावी प्रतीक हैं। अनेक सूति-विक्षेप में उनका तरवर शामद हो जाता है।

जिन्होंने जो लकार मादत राकेड लड़का सज्जा रहा है, उसकी बुझिये उनकी कालतिथों में खफा। अग्रिम पांचतिथों में होती हैं "महुत से इसांन हैं", जिनकी जही-न-जही किती-न-किती बोराही एवं गलत दिशा जी और अवज्ञा भाती है। कभी यही उपित नहीं है कि इसान उस रस्ते को छद्मलकार अपनी गलती खुशाह ले? आखिये इसान जो जीने के लिए हुआ ही जीवन तो गिलता है—वही प्रयाग के लिये और वही जीने के लिये। तो क्यों हसान एक प्रयाग जी असमिलता जो जीवन की अभियलता नात के?

थथवि जी आतिथ्यान्ति और अनुभवों की प्रभावित भाँदर राकेडों की जाहाजियों में अच्छे रूप से परिभाषित होती है। एक और जहाँ उन्होंने मलबे जा मालिक कालती में विभाजन की त्रासदी जैल रहे थे की व्यापा जा धरार्पि नियम किया है तो दूसरी ओर जनकल नामक गहानी में वार्तायी श्रीविंशति के विवासियों की भविष्यती और उद्दिश्य जो प्रभाविता के भाव आतिथ्यान्ति किया। एक और जहाँ उन्होंने मलबे जा मालिक कालती में विभाजन की त्रासदी जैल रहे थे जो की व्यापा जा नियम किया है।

केवल संवेदना ही नहीं बल्कि अधिक्य और आधा-प्रयोग में  
माधव रामेश सिद्धास्त है। उन्होंने विषयानुसार प्रसंग। नुश्शल  
सर्वज्ञ, सहित, व्यावहारिक, असंकृतानुभूति के परिमापित जड़ी  
बोली का प्रयोग किया है। इन और जिद्दी जागावी में माधव  
रामेश लिखते हैं कि "व्या सचमुच पहले की जिद्दी जो  
लिटार्जी इसान वर्ष से लिद्दी शुरू हर साल है।  
जिद्दी के गुद्दे वर्षों से इन्हें शुरू हर साल है।  
जिद्दी के गुद्दे वर्षों से इन्हें शुरू हर साल है।"

आरंभातः कह सकते हैं कि माधव रामेश आधुनिक  
दिली भावित्य के चुंग प्रतीक साहित्यार है। उन्होंने अपने  
साहित्य के चुंगों, झूलते, दृष्टे और विस्तृते विषयों का  
नियन वर्तुली किया है। व्यंजन वर्ग जागावीकार के रूप में  
माधव रामेश का विविष्ट को उद्घाटित नहरं चुंग गहरे  
है कि "डेली जागावीयों में चुंग के आभाजित अधारी  
और पस्तु सत्य के अंदर में जीवन की प्रतिक्रिया, वर्तने  
हुए विचासों को गति देती वेतना और एक संलग्नात्मकीय  
दृष्टि जीवती है। जीवन मुख्यों की इस अंगाति में भी  
विवरण और विचासों की गति और दृष्टि देते विचासों की  
लगारी पर जी एक अंतरिक भावनीय आस्था और विष्ठा। इन  
दृष्टि का संकेत भी डेली जागावीयों में जीवता है।

जुलाई 2022 गहरात है कि 'अभास' जो एक दिन,  
और आधी अधूरे। जैसी जाजबथी नाजूक और अंदरौरे  
लंद अभरे, न आम वाला जल और अंतराल जैसी सुप्राप्ति  
उपव्यास लिवर्पूर प्रतिष्ठित होने के साथ-साथ माधव  
रामेश ने इन और जिद्दी है।

④ 'डाइंग २१म' कहानी में आनियन्त जीवन वर्षित की अपहृत रहते हुए उसकी कथा संस्कृता पर प्रकाश डालिए। स्वातंस्योत्तर हिंदी भाषाभक्त साहित्य के प्रमुख स्पनाइर राज नमन चौधरी के साहित्य में इसी लागरिक जीवन की अदिलता, अजबूरी और सहज मानवीय संवेदन की गहन तलाश परिज्ञानीत होती है। राजकमल चौधरी की अद्वातियाँ हमें अभ्य की छुट्टता से मुँहमें ज़रने और जीवन संग्राम के अध्यावहन से चुनाँती भी जा साहस देती हैं।

## डाइंग २१म

डाइंग २१म स्थायीता के एवं दमने लात की कहानी है। यही एहत अभ्य है जब और पूरे देश की प्रवंशन व्यवस्था अपनी अंतर्राष्ट्रीय परिवार की परक परक में व्यस्त भी तो इसकी ओर आम भारतीय नामांकन जीवन अपने की छुनियाली झुविला खुलाने और आत्मेत की रक्षा के समाधन तलाश में तत्पर भी। डाइंग २१म ऐसे ही लागरिकों की प्रतीतिव्य आदरित नाम की आरोपीय चुक्की की जीवन व्यवस्था की अद्वीतीय।

## डाइंग २१म जहानी में आनियन्त जीवन वर्षित और कथा संस्कृता:

स्वातंस्योत्तर भारतीय समाज की परिवर्तीतेयों और प्रवृत्तियों का जपा संस्कृता के रूप में दृष्टिगति करनी। डाइंग २१म जहानी में आनियन्त की रक्षा करने और आनियता के साध-साध मानवीय जीवन की विर्द्धिकरण। और और वर्षित की अलियनित साध देती है।

## मानव जीवन के विंशता नी प्रस्तुति :-

श्रीहंग २४

ज्ञानी मे कथावाचक औ ज्ञानाविका और कथा परिदृश्य के नागारिक जीवन जो विश्व आंचक लेता है। वास्ताविकता और प्रवृत्ति के बीच जो विरोधाभास; और ऐसा जैव की मानवीय मध्यारियों उक्त अद्वितीय प्रवृत्ति करती है। वास्ताविकता आध्यात्मा पर होते हैं तो प्रसाद मानव जीवन ही इन वालों हैं। इन वालों मे ज्ञ भनुष्य जो लार-बार तरह-तरह जो लाएके रूपों वालों पड़ता है, सामाजिक स्थिति मे रुद आस्तीन की एका और अपनी नामीय आस्मिता जो संलेन देने के हुए भनुष्य पल-पल स्वांगों मे ज्ञान लेता है। उसके भौमोभावों जे लीकानों और लिप्तता द्वे परिवर्तन जावे के ज्ञान ते लार-बार वह धृत्युता है लेता है। श्रीहंग २१म अद्वानी इसी बात जो प्रकृत जैती है।

## भामानांतर व्यवस्थाओं की और संज्ञेत :-

संज्ञेत के

अर्द जो उपर्युक्त स्थान उड़ी ही है उपर्युक्त-पुरुष ने १६ वर्ष हैं। इन तरक नैतिकता, भौमीयता, राष्ट्रीयता, सांस्कृतिक मूल्यों के परिवर्तन और सभ्य-सामाजिकता जी उदाहित ही जो १६ वर्षी तो इसरी तरक अपार्द ने सामाजिक मे शृण, तरकारी, फरेव, गवन, घाटाले, दूसरों जो व्यव्धा वल १६ वर्षी इन साथ दो सभांतर व्यवस्थाओं जो निमित्त परिवर्तित हो १६ वर्ष वा पाप-पुण्य, ईमान-धर्म, उचित-अनुचित और नाति-अनीति जे अक्षयों मे सभी अपने-अपने १६ उदाहित हो १६ वर्ष।

## मानव जीवन के विंशता की प्रस्तुति :-

द्वादश २४

ज्ञानी में ज्ञानाधिक जो ज्ञानाधिका और ज्ञान परिदृश्य के लागारिक जीवन जो विन्द्र और ज्ञान के लागत हैं। वास्तविकता और प्रवृत्ति के बीच जो विरोधाभास, और ऐसा जगत की मानवीय मनुष्यरियों छुक्त जड़ी विंशता पेश करती हैं। वास्तविक आध्यात्मिक परम गहे तो इराम मानव जीवन ही इन लालों हैं। इन लालों में ज्ञान मनुष्य जो लार-बार तरह-तरह जो लालों के रखलगाए पढ़ता है, सामाजिक स्थिति में रुद आस्तीत्व की एक और अपनी नामीय आस्तीत जो संकेत देने के हुए मनुष्य पल-पल स्वांगों में जीवन रहता है। उसके मानवों के लिए लीकाता और लीकता से परिवर्तित जाने के लाभ हैं लार-बार वह धूपिता है रहता है। शृंग राम जैनी इसी जात जो प्रकृत जाती है।

## भागान्तर व्यवस्थाओं की ओर संकेत :-

संकेतका

बाद जो अंगामिक सभ्य जड़ी ही उपर्युक्त-पुरुषों ने रहा है। इन तरफ नैतिकता, समवीक्षण, राष्ट्रीयता, सांस्कृतिक मूल्यों के परिवर्तन और सभ्य-सामाजिक जीवन के दृष्टि दी जा रही थी तो इसी तरफ अपार के सामाजिक में धूठ, तरकी, फरेब, गवन, घाटाले, धूसरवोरी जो व्यंग्या व्याज रहा था। इन साथ दो अमान्तर व्यवस्थाओं जो निमित्त परिलक्षित हो रहा था। पाप-पुण्य, ईमान-धर्म, उपर्युक्त-अनुपर्युक्त और लाति-अनीति के भवित्व में सभी अपने-अपने तज उद्दीपने रहे।

## सामाजिक परिवृक्ष ना पिता :-

प्रभावात्मक सामाजिक ना

सुनिश्चित गती काहिं राम उनके अप्पा लेखन जा एवं आस तेज  
प्रस्तुत जाती है। सर्वांगोत्तरकालीन आरतीय अभाज ने बासिति  
परिवृक्ष में खद्दां इन तरफ इश्वर के हिस्से जा पक्का प्रमाण  
उपलब्ध १२८ ज्ञाने वालों जा दल भागिय था तो इसी तरफ लोग  
आस्तीत्तर रक्षा के साथव खुलाने में अपने अब जीवान ली  
शोक १६ है थे। सभाज नी यह दशा अब जोहि भात दमान बीत  
घाने के लाद भी यथावत है। शहदगा १२८ गती निर्मली नी  
सामाजिक परिवृक्ष ना पिता पक्का जाती है।

## मालव जीवन और कार्य पृष्ठि ना १०५ :-

लापानाथीना

आशीन जो अपने पारिवारिन अरण पाखण के लिए लोडी बाजी,  
चाहिं, नामी पाने के लिए किसी महत्वपूर्व व्याप्ति जा  
सिखेंडेश्वर चाहिं, रिकमेंडेश्वर ने लिए उसे उस व्याप्ति जो किसी  
जी तरह प्रभावित नहीं है। इस प्रगार १६ पद्यांद वामन व्याप्ति  
को प्रभावित नहीं के तरीके जा आविलार जैती है। उस पद्यांद  
उस तरीके से प्रभावित नहीं होता तो १६ इसरे तरीके जा  
आविलार जैती है, इस लार तर एवं सही विचारे पर लगता  
है। आशीन जा जीवन संसार और जारी पृष्ठि उमाई  
अभाज में भी आप जी बदलते राधन हैं। ५६ गदानी उसी  
जीवन पृष्ठि से होरे सुखुपत मानस जो खाटूत जैता है।  
इष्ट लार तर एवं सही विचारे पर लगता है। यह गदानी  
उसी जीवन पृष्ठि से होरे सुखुपत मानस जो खाटूत जा  
हो लगता है।

## सामाजिक परिवृश्य ना पिता:-

राजकामल यांवारी जी

मुख्यालिपि गदानी शाही राज उनके गदा लेखन जा एक सास रुग्ण प्रस्तुत जाती है। सत्यांगोत्तेलालिभ आरतीय समाज के नागारिकों परिवृश्य में खद्दा एक इच्छें को दिखाये जा पवन पलाश दृपकार ऐश्वर्य जब्बों वालों ना दल साक्षिय था तो इसकी तरफ लोग आकर्तिक रक्षा के अधिक जुलाने से अपने अभ लोकान् जो क्षोक रहे थे। समाज जी यह पृथा अब जोड़ी भात दूबाने वित खाने के लाद भी यथावत है। शाही राज गदानी देखी ही सामाजिक परिवृश्य ना पिता पेश जाती है।

## मात्र जीवन और कार्य पृष्ठि ना वर्णनः-

ज्ञानाधिका

आइरीन जो अपने पारिवारिक अठां पौष्ठा के लिए कोई नहीं, पांचिं, नांगरी पाने के लिए किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति ना किसी हेतु चाहिए, रिफर्मेंटेशन के लिए उसे उस व्यक्ति जो किसी भी तरह प्रभावित नहीं है। इस प्राप्ति वह प्रयातंद वाम्पी व्याप्ति को प्रभावित नहीं के तरीके जा आविष्णार जैती है। इस प्रयातंद उस तरीके से प्रभावित नहीं होता तो वह इसरे तरीके पर आविष्णार जैती है, इस बार तीर एकम सही निमाने पर लगता है। आइरीन जा जीवन संसार और कार्य पृष्ठि हमारे अभाज में भी आप जी बहुत जायने हैं। यह गदानी उसी जीवन पृष्ठि से हमारे सुषुप्त मानस जो आगृह जैता है। इस बार तीर एकम सही निमाने पर लगता है यह गदानी डसी जीवन पृष्ठि से हमारे सुषुप्त मानस जो आगृह जा हो जाता है।

एतियों ने परिस्थिति और भवोपृष्ठि का उद्धारने:-

यह वह आरंभिक दौर था, जब पृथक् भर

एतियों ने अपनी आमामेनिता पर नीति की तलाश के लिए  
जर परिषार से अलग रहके या जने की स्थिति नो महसूस  
किया। परंतु वे लोग समाज की भवोपृष्ठि अभी परिपक्व  
होने के बाबा आंशिक थे। ऐसे समय में आइंगाओं ने  
बाटोप लालने और समाज का इस पक्षीली यादि गमी  
पाँच लावण्यमयी चुलियों से अरे धस नी उस आमिभाविलों की  
लाली या लाल जने की इच्छा देख अपनी उदाहरण दिखाता  
है तो उसकी पृष्ठभूमि में लिती आइंगाएँ होती? ५२८-५२-  
५२८ सपाल ३६ता खाता है, ज्यादा के द्वितीय नी ८६४। शाहिंग  
सभ लाली एतियों की इसी परिस्थिति और भवोपृष्ठि का  
उद्धारन लाती है।

समग्र जप और इस सगते हैं कि राष्ट्रभाषा चाँधी  
द्वारा लिखित शाहिंग २१८ १७ भूत्यपूर्व गदानी है। इस  
गदानी में अधिकारी के पश्चक के बाद ने लागतंक में आम  
लागारिक के लिए नी प्राविष्ट छ्वान नो लिया गया है।  
वह आरंभिक समाज की असमानता को प्रस्तुत करती है।  
अहों ज्ञ ओर समानि और सुरक्षा सुविधाओं का अंसार है।  
तो दूसरी ओर बुनियादी शुविधा खुलने और आरंभिक  
की दृश्या का तलाश। आंदर और रवानवलेपन के साथ-साथ  
जापारी और चतुराई जो अधिक बनाते हुए भौमिका परिदृश्य  
नी। विडंकना और फ्रेव्यामास के सदारे उक्त लालनी जे  
जीवने पड़ते जो आमिभाले लिया गया है। ५२८-५२९  
होती है।

परन्तु वे लोग समाज की मनोवृत्ति जहाँ परिपक्ष न होने के कारण आशंकित भी। ऐसे समझ में आश्वासों के धाराएँ अदल से अर्थ समाज का इन पड़ोसी यदि जहाँ पाँच लाख्यमयी शुभमेयों से भरे वर्ष की उस आशिभाविता की जाँचरी थी ताकि उसने नी इजाजत देने अपनी उपायता दिखाता है। तो उसकी पृष्ठभूमि में कित्ती आश्वास छोड़ी ? परन्तु अवाल उठता जाता है, याज के धिलके नी तरह। शाहंग जग गदानी ऐसी जी इसी परिस्थिति और मनोवृत्ति का उद्धारण करती है। राष्ट्रजन्मले चाँथरी दश लिखित शाहंग जग का बहुत पूर्ण गदानी है। इस गदानी में आधारी के दशन के लकड़ के लागतक्र में आज नागरिक के जीवन नी प्रविष्ट हो जो उनका अभिनव नाम।

अहं इन और संपादित और सुख सुविधाओं जा झंझार है तो दूसरी और शुभमेयानी सुविधा खुदाने और आतिव नी रक्षा जा तबाहा ग्राउंडर और रबोरपल्मर के साथ-साथ लापारी और चतुराई जो आधार बनाते हुए माँझुदा परिदृश्य नी विद्युता और विरोधाभास के साथै इसी गदानी नी जीवन धर्मित जो आमिथजन्त लिया गया है। यह र्षी-र्षी द्वारा तुरानी व्यवस्था के पक्षते एवं भूल्यों तथा वर्ती व्यवस्थाओं और जापांगोंनी जो लिलती धर्मिता जो उद्धारण नहीं है इश्वरासक इतना बड़ा नहीं था। भेरे ठीक आपने इन नंबर सोका पड़ा पा और सोके पर तन लड़ाकां खापनी शुद्धियों जी तरह दृढ़ी जी लड़नी लिनारे इतनी हुई लोनी - "आप हैं डिग, दीदी लाप के रही हैं, उस भिनट में आ आजगी।" शाहंग इतना छोड़ा नहीं था। उनकी जातियाँ संख्या में बहुत अधिक नहीं हैं। नमिन ईपोन्ट व्यापक और गहरा धर्म पड़ा

राखगंगले - वॉली जी आजाएँ जहांनी 'काँडा राम' डेवले  
जन्मालेखन जा दूज साल २०८ प्रभुत जाती है। स्वास्थ्यमेहलालीत  
आरतीय अमाय के लागरिक परिदृश्य में जो तरफ दूधरों के  
हिस्से जा पवन-प्रगाढ़ ६५५८५ जिंग लग्नेवालों जा १८ लाख  
था। तो इसी एक जीव आरती-४का के भाष्यक जुलाई  
में आपने अम-जॉगाले को शोलं रहे थे। आरतीय समाज जी  
यह पवन अब लोई पाँच पदान लीत ०१५ के लिए भी लखनाला  
है। काँडा जना जहांनी जिसे ही आगामिन परिदृश्य जा पिछे पैदा  
जाती है। जहांनी जी बायिला आशीर्वाद जा जीवन-संसार और  
जारी-पक्षति द्वारे समाज में आप भी लक्षण्य जायम है। यह  
जहांनी डसी जीवन पक्षति के द्वारे समुद्र ममस जो जागृत  
जाती है।

आशीर्वाद जो आपने पारिवारिक अरन-पाखण के लिए नहीं  
लांजरी पाहिज, नींगरी पाने के लिए जिसी महल्लधूर्व व्यापी  
जा 'रिक्कमेठीश्वर', 'पाहिज', 'रिक्कमठेश्वर' के लिए उसे उस  
व्यापी को जिसी भी तरह प्रभावित जैना है, वह व्यापी  
कोहे प्रभावित होगा, यह आशीर्वाद जो मालूम नहीं है। १६  
देखानेव जो प्रभावित जैन के तरीके जा प्रभावित जैना है,  
उसने व्यापी जो देखा और समझा विस्तरे ले पहुंच द्वाद  
वह व्यापी को प्रभावित होगा, यह आशीर्वाद जो मालूम  
नहीं है। १६ देखानेव जो प्रभावित जैन के तरीके जा आविष्कार  
जाती है, १६ देखानेव उस तरीके से प्रभावित जैनी होता है, १६  
इसके तरीके जा आविष्कार जाती है, तीरु छान्दो भी सही  
जीवान्त एवं जगता है। वाकई धर्मव्यापार आविष्कार जी जानी  
शाती है।

(5) 'सुरक्ष लानी' के बारे में विश्वासण निमित्त।

- कागजीलाप सिंह भागीरथी प्रीति के लिए अमात एवं महाविद्युत  
जपानी है, जिन्होंने अपनी लाइब्रेरी के माध्यम से आधुनिक  
जीवन की विद्यालयाओं में जुड़ रहे परम मनुष्य के वर्चार्य की  
आशीर्वाद दिया है। जन-जीवन के अपार्य और सरकार  
भृष्ट रूप से प्रस्तुत रहने वाले सुप्रापुष्ट आदित्यनारायणीय  
सिंह जगतवाली लाली आदानी लाली विद्या के विषय में  
लालीनारायणीय कागज उली लाली विद्या के लिए लाली  
लिखते हैं — "यह आजकी सारी जपि व्यापा के लिए लाली  
चपानी रखता है। यह जी निर्बंध, समीक्षा, विषयों, व्याख्या,  
वाचिका या असुख के लिए नहीं सिर्फ जपि के लिए। यही  
विषय है जो 'लोग विस्तरी पर। यह, यह 'सुरक्ष', पाठ  
'मानवीय दोष निर्विकरण के लाभ' को यह 'सभी-जा संबंधों बहा  
आदानी', कागजी जी नहीं भी लाली नामुकानील या अधिकी  
लाली है। यह भी लाली उली छोड़ी नहीं लिखी है। यह से पहले रह  
आपको जगे इसमें तुष्ट दृष्ट गया है या इसमें तुष्ट और धौता तो  
उत्त्यार अस्था होता।" सुरक्ष कागजीलाप सिंह नी बोहद महाविद्युत  
लाली है। सुप्रापुष्ट अधीक्षण नामवर सिंह लाली : नयी लाली  
में नई संवेदना, नये लाभों की वर्षा जह नहीं है तो तुष्ट  
गीली चुले लालीविद्या में सुरक्ष का लाभ ज्ञात है।

सुरक्ष लाली के बारे में जो स्वर्य कागजीलाप सिंह लाली है  
कि 'यह लाली भरी ही नहीं, और वाई ने अभाग निभाज  
नी चुलआत थी।' जल जीवन के वर्चार्य और सरकार और  
भृष्ट रूप से प्रस्तुत रहने वाले सुप्रसादी आदित्यनारायणीय  
कागजीलाप में जपा आ।

## सुरक्षा नियमी का लक्ष्य

सुरक्षा नियमी कानूनी विधिवाच के पहले

नियमी संग्रह 'लोग विस्तरों पर' जी इन महत्वपूर्ण नियमी हैं।  
सुरक्षा नियमी की नियमी और स्वतंत्र्योत्तर नियमी जी प्रशुरण  
नियामन विविधताओं और प्रवृत्तियों जो आनियामन नहीं हैं।  
इनमें जहाँ इन और युगीन परिस्थितियों का उद्देश्य और परिवेश  
और प्रकृति से विवेद दृष्टि हृष्ट अंबलों की आनियामन हुई है  
तो दूसरी और मनुष्य जी मनोवृत्ति और बादियों से हृष्ट जो  
नियमित नहीं हैं।

## युगीन परिस्थितियों का उद्देश्य :-

आधुनिकता के आगमन

अप्रृथम विकासिता के समावैश्वर्ण के साथ-साथ भवितव्यका का  
उद्देश्य, शाहीजाहां के दबाव, अलगावविद्या, अनेलमन, अजननवीपन,  
उपर्युक्ता और अंबलों में दृष्टे मानव अभाव तथा संस्कृति  
पर व्यापक प्रभाव डाला। जिसका प्रयोग साहित्य प्रभाव पर भी  
पड़ा। इसी पौर में भविता जी तजार नहीं और नियमियों  
नियमी हो। सुरक्षा जी नियामन से स्पष्ट है कि यह नियमी  
प्रकृति और मनुष्य के वीर के रूपों जो व्यापक नहीं हैं  
अंबलों के विविध अलगावविद्या और क्षारित दो एकी संवेदनाओं  
को इन आप सुरक्षा नियमी में परिलक्षित किया गया है।  
भविवादी आदिवासीर कानूनीवाच यहाँ जी सुरक्षा इन  
नियमी हैं जो विल और विभाग में संपन्न वर भागी हैं  
और विधिहित दृष्टि व्यवस्था के प्राति आम आदमी के नव  
में उठने वाले अंसराव ये आगोश जी आवाहन जो  
आनियामन किया गया है।

परिवेश और प्रकृति से विद्युद होते हुए अंबंधों की

**आविभागी :** — सुख जगनी ना कर्य इस सात की ओर  
संकेत लगती है कि अगलाजीन मनुष्य जीवन की आपाधारी  
में इतना व्यस्त होता है, कि उसे अपने परिवेश में प्रकृति  
की ओर देखने की चुस्त बही जिजीती। भोजनाभू के आवश्यक  
ग्रहण किए। उद्योगों पहली लाइ अस्थान देखा। उद्योग शुभी हुई  
थह अपेक्षी जागी चुराति वे अपनो बताते हैं। अपनी चुरण की  
आविभागी भव में लौटा चाहते हैं। लैन इन लौटे उद्योग  
पारगण का समक्षात है। सुख जगनी में गहनीजार आगीनाथ परी  
मनुष्य के अपने परिवेश और प्रकृति से उसके विद्युद होते हुए  
अंबंधों को प्राप्त नहते हैं।

**योगी की मतोवृत्ति ना तिरोः—**

जागीनाथ लिहां की  
जगनी झुरण। जो ऐसे व्यक्ति की जगनी है जिसे अपने  
में हुख जिला, जिला जगनी ना लाभ 'झुख' पड़ा। कथाजिते  
क्ष जगनी का गुरुत्य पक्ष गोला भृष्ट है जो जगनी के  
झुख में लो झुखी होते हैं। किंतु जगनी के अंत तक जाते—  
जाते वह धर्म धर्म से हुखी दिखाई देते हैं। झुख जगनी  
के प्रारंभ में ही लैखना के एक ऐसे व्यक्ति जा गया लिहां  
जो हुद दिनों पहले ही रियायर होकर अपने धर्म लैखना  
है और वार्ष के अभ्यर्थ अपने धर्म की विड़नी से झुख जो  
देखना— लैगांचित हो जाते हैं। लैखना जाते हैं जो—  
“वे क्षमरे में पड़े अस्पनार पक्ष रहे थे। एक वार्ष विड़नी से  
जोड़ किया आई और और अपने गंजे सीर पर पड़ रही।

जैसे वह किसी दृष्टि बर्ये के हपली हो। " जब भीला वाष्प  
त आकाश व्रहा लया। शाम नो उद्धार अस्त दात उच  
खुरें को देखा। उद्धर पृथ्वी भार मध्यस्थ दुआ के दुनिया में  
अर्द्धी-अर्द्धी चुंड-चौंड जी ही हैं। वे मुख्याश देखो, दुनिया  
में ज्ञा-क्षा जी है। किती अर्द्धी-अर्द्धी चौंड। अस्त दात  
हुए खुरें जी गोलाई उपाका ज्येष्ठ आई उद्धर सुख की  
अनुशृति लाता है और इसी अपनी अनुशृति नो अंगों  
के लिए परिवार के अन्य सदस्य नो उभार उस मनोरम  
दृश्य नो देखने को नहीं हैं।

### प्रादेशों के द्विं ना रैवाना हैं।— १९१८ त्रिव्यात्मक हिंदी

कामालियाँ प्रादेशों के द्विं नो रैवाना हैं। नयों पाली  
स्पष्टी और दुनिया में आगमनी, मन्यार्थ दुर्ग, भस्त दृश्य तो  
पुरानी पाली कुस्ति के दिनों में अपने अतीत ना स्मरण नहीं  
है। दिनों में इसके जी आपनाओं ना अभद्रेष्वा जाते हैं  
जो हुए हैं। सुख गदावी जा आजा भष्ट भ्रष्टि के मनोरम  
दृश्य और सूखस्ति के सांदर्भ नो विद्वारत है जस्ती नयी पीली  
को सूखस्ति के सांदर्भ भी लाई रवासा मतलब नहीं है। यहाँ  
द्विं अुलिया हो जाती है परन्तु उसकी अंगुर प्रसंकुटि दात  
है। आजा भष्ट जब अपने परिवार के लागत नो सूखस्ति  
को देखने को जाते हैं तो जब जोग अनमने दूर से  
उसे देखने का नाला नहीं है।

"सुख देखते ही या नहीं"

सुख ? साहव तो विस्मय संहा।

तुम्हें आप सुर्ख देवा था?

कौन सुर्ख? सुर्ख तली?

बहीं, काल्दू | बेवकूफ-भाला भट्ठा | रणधन तडे।"

बदलते और विवरते संबंधों ना पहिलः—

सरांखालू

दृष्टि काणतिथों तकालीव परिवेश में बदलते और विवरते संबंधों को अपार्प के साथ अग्रिमत लगती है। सुर्ख जदानी जा जाए जी इस बात की ओर इशारा लगती है। इशारा का आधिकारिक  
सिद्ध अपनी जदानी 'सुर्ख' का उल्लेख लगते हुए लिखते हैं—  
सुर्ख प्रतिसि से बिद्धिक दात जा रहे अनुष्ठ जी जदानी है।  
मनुष्य जे मनुष्य के, पिता जे पुत्र जे, पत्नी जे पाति के, भाई से  
बहू के संबंध के दूर्वे चा एक्सेने जी जदानियों तो। लिखते हैं—  
वाले और जी जे लिला 'सुर्ख' जी वीज डाला थी— उसे  
जदी। यापन और आमाला। अपने ही परिवार और समाज में  
अकल्पन पक्षे जा रहे मनुष्य जी जदानी।.... स्वाधीनता वे  
'नई जदानी' में जो आशाह, आंखाउं और सपने खगाह पे,  
उहैं आरत—वीन सुर्ख के दृष्टि जा दिया। विनास जी  
भारी यापनाहूं अव्यापार जी इलाह साधित हो गई थी।  
देव अवधार दो गाथा चा और इशारा साधु-नामा रुद्र जो  
डाला और निरीह भव्यस वारे लागा चा उमारी जहानियों  
इसी अकल्पन और दृष्टि दोते जा रहे पुरभे भूल्यों जी  
प्रतिवेदियों थी। "विनास जी भारी यापनाहूं अव्यापार जी  
इलाह साधित हो गई थी। अपने ही परिवार और समाज  
में अकल्पन वरिवार और समाज में अकल्पन पक्षे जा रहे मनुष्य  
जी जदानी दाते हैं।

## १९४७ और आमनेंद्रित दृष्टिकोण :-

भाषालीन

आधुनिकता के इस अंधी दृष्टि के मुख्य में न लगते उसकी सेवता धीरे ली गई है जो इस स्वार्थ और आमनेंद्रित के दृष्टि अपनाने के लिए मध्यम गर्दा दिया जाएगा। आजलोग अपनी - अपनी खस्त और महत्व देते हैं। सुरक्षा क्षमता में भौतिक शब्द समझ आया अपनी ओर आगृहित जैसा पाइट है। जबकि परिवार के अन्य सभी उनकी अपनी ओर बढ़ते अपनी-आपनी जायें जो प्राप्तिक्षमता देते हैं।

भास्तव के रूप में इस अन्त है कि नागरिकाएँ अपने नी सुधारित जैसी 'सुरक्षा' में जैसे जो और मनुष्य के अन्य संवर्धनों के साथ-साथ प्रश्नाती अंबंध के ही इह विवरण जो परिभाषित किया गया है तो वह दूसरी ओर इस संबंध विवरण के जैसा अलग-अलग पड़े प्रश्नाती और मनुष्य विहित जो विनियत किया गया है। इस अनेकपन के जैसे जैसे भौतिक आष्ट और अंसु लोगों जो जीवन रवीश-आरु दुःखों से भर गया है तो वही परिवार के अन्य लोग जैसे ही वह अनेकपन महसूस नहीं होता, उनमें जीवन सुखमय है। आयद वही जैसा है कि जीवनीय ही जैसी जो नाम ही नुरुर १९४७ दिया है। १९४८ असले जैसे वह ही जो भौतिक आष्ट अनेकों जैसे व्यक्ति हैं जो अन्यतंत्र के जैसे रेटियर ही जैसे जो जैसा खाली हो गए हैं। अन्य अनेक पास समय ही समय है, जैसे अन्य लोग अभी भी व्यक्त हैं, जैसे जैसा जैसे जैसे व्यक्ति होती है, वह अन्य जो नहीं है।

⑥

दालित साहित्य की अवधारणा पर प्रभाव दालित हुए 'सिनिया' कहानी के महत्व की स्पीज़िलेज।  
 वर्ष - व्यवस्था का विवाद और समता की स्थापना ही दालित साहित्य का लक्ष्य है और आदिनाल ने सिंह, गवि इसी चर्चा के संबोधक हैं। समाजिक परिवर्तन और समाजिक व्यापकीय की इसी प्राचीन धारा के समानांतर व्याप्ति साहित्य की परंपरा आस्तीन में आयी जिसकी त्रिवृत्ति प्रवृत्तियाँ वर्ष - व्यवस्था के समर्पण की रहीं।

दालित शब्द का अर्थ होता है जिसका दालित या दर्शन हुआ है अपरिवर्तनीय रूप से दर्शन हो। दालित साहित्य का सामने लाने, उसे स्वापित करने के और परंपरागत ऐसी साहित्य के समानांतर दालित साहित्य के उभयादी भरोलारी के उद्योगों करने में दालित साहित्यकारों ने अद्यतनी दृष्टिपोषित साहित्य का अर्थ स्पालारों के दालित समाज की विवादों के विवरण जो अधिकारी विद्वानों के साहित्यकारों ने भागीदारी करने के द्वारा लिखा गया साहित्य की प्रभावित दालित साहित्य का बाण।

दालित साहित्य इस लात का आभास करती है कि क्षेत्री वर्ष - व्यवस्था के असमिता के सारे आविष्कार दालितों से होता है और ये और कई मुख्यधरा लाभ द्वारा से लाभ लेते हैं। जिसके नामों लिखते हैं जो सारे माझे उसके लिए उपलब्ध होंगे। दालित साहित्य में जनमातृता जातिगत पूर्णिमाएँ तो विशेष ना भाव हैं।

जो उनके जीवनमें मेरे दैर्घ्यके लोगों लिखता है। सभाज में धर्म  
व ज्ञान के अध्यात्म पर्याप्त विवरिति है उनमें बदलाव  
जाने की घटना दिल्ली साहित्य में दृष्टिगतीय धृती है।

## प्रालित साहित्य की अवधारणा:-

प्रालित साहित्य की

अवधारणा ये अवधारणा की दर्शक सर्वेक्षण मार्गी साहित्य में आयी  
हुई। इसके अपराह्न विद्या-विद्या उसका विद्या भारत की कथा  
ग्रामांशों में हुआ। ओमशास्त्र वालीकी प्रालित साहित्य की परिभाषा  
है द्वृष्ट लक्ष्य है कि "प्रालित ग्रन्थ द्वारा ग्रन्थ, ग्रन्थित, प्रीत,  
प्रतापित के अर्थों के साथ उस साहित्य में जुड़ता है तो विरोध  
ज्ञान लगाएँ जो उस सेवत ग्रन्थ है। १९६८ लगाएँ या विरोध याद  
व्यवस्था जा दो, आगामिक विसंगतियों जा या व्यापिक रूपों;  
आग्विक विषयमताओं जा दो, या आधा मात्र जे अलगाव जा दो,  
या साहित्य परंपराओं, वर्णनों या भाँटदर्शग्रास्त जा दो। प्रालित  
साहित्य लगाएँ जो साहित्य है, जो संबंधों से उपजा है, जिसमें  
सभाता, स्वतंत्रता और उंचुता जो भाव हैं।"

प्रालित प्रालित साहित्य की निरन्तरी जी अवधारणा विस्तृत  
हुई है उनका प्रभुरूप प्रथाभन है - सामाजिक परिवर्तन और  
मानवीय संवेदनाओं के सरोलाई से जुड़ाना सामाजिक प्रतिक्रिया  
स्पायित जाएगा। प्रालित यिंतक गंवत्त भएती जी व्यापार है जो  
"प्रालित साहित्य से आलिप्राय उस साहित्य से है, उसमें प्रालित  
ने अपने अपनी पोढ़ जो रूपायित जेपा है। अपने जीवन  
भौतिक में प्रालितों ने जिस व्यापारी जो भागा है, प्रालित साहित्य  
इसी इसी व्यापारी जो आलिप्राय जो साहित्य है।"

व्यापिक वहां का लोगों के पासतर में दलितों द्वारा लिए गए साहित्य ही दलित साहित्य की शर्त में आता है।

दलित साहित्य की मुख्य विवरण जीवन के अनुभव जो अमिन्यती प्रदान करता है। इसमें रघुनाथ अपने तथा अपने आज-पास के जीवन के अनुभवों, सामाजिक व्यवहार और जीवन में घटित घटनाओं को प्रस्तुत करता है। दलित साहित्यकारों द्वारा सामाजिक आचारों को व्यवहार में खागड़ ही है जो कि साहित्यकारों द्वारा अनदेखी गई। दलित समाज में माहिलाएँ दोहरे गोपन का भी भिन्न हैं - एक पितृसत्ता और दूसरी वर्णव्यवस्था से। आजादी के बाद भी मारत में भाहिलाहँ, विश्वधर दलित माहिलाएँ पितृसत्ता ऐसे वर्णव्यवस्था के गोपन का भी भिन्न है। दलित जातियों में दलित समाज की लड़नी, लिंग-तर की विविधता भुज्य, अतिरिक्त नारीय स्थिति में जीवन की विवरण और मानवीय आविकारों की त्रासी हेतु आम-सभगता खामत हुई है।

### सिलिंधी काहानी का अद्दल :-

दलित नारी चेतना का

प्रतिविधि और दलित विभाग की हुरीधारा सुगीला टांगामरे द्वारा लिखा 'सिलिंधी'। यही समाज की इस धोनदार लड़नी की अद्दली है जो उच्च शिक्षा पाने की इच्छा, आशामारी ऐसे गठनीय विभाग की लड़नी है। वह लड़नी भर ही भर अपने समाज में दुर्धारा लाने के लिए दुर्द अंगत्व है। वह एक प्रगाढ़ से अपने भाई दुष्ट समाज के लिए खागड़गति के प्रेरणादारी पात्र है। सिलिंधी काहानी में सिलिंधी और उसकी जी जी

46 लोकी दलितों के मात्र सह मानसिकता को भी  
क्षेत्र जरूर बढ़ाती है। सिलिया ने भव वास्तव में भी है  
कि "अब उन्हें आज तक पहुँच लानी, शिक्षा के लिए अपने  
समीकरण को भी बड़ा लगानी। और उभी परिपराओं को जारी  
जा पता लगानी, जिन्होंने 30 अष्टुत ज्ञान दिया है"। सिलिया  
को अठिलाश्यों से मौद्रिक प्राप्त जरूर है। क्षुद्र और प्राची  
शिवायी शिलिया ने सभी से अनेक सामाजिक उत्तीर्ण सह  
है। किंतु भी इस तथार्थ अनुविद्याओं के लिए भी ऐसे समान  
के जीव आहती हैं। यही संगल्प उसने जी वाजत देता है।

सुभीला लोमार्ह द्वारा एप्रिल सिलिया जहारी में गए  
एक आर्थिक समाज के जाति व्यवस्था और सामंति व्यवस्था  
के बीच पर्याप्त विस्तृत विभिन्न अनुकूल भी दृष्टिगोचर  
होती है, जो सामाजिक विवरण जो भी है। सुभीला लोमार्ह  
सिलिया जहारी के बारे में बहती है। "सिलिया जहारी ज्ञाना  
कर्त्ती यथार्थ है। अब इन अष्टुत ज्ञानी जी जीवन जो जड़पर  
भल्ले। यही शिलिया ने अपने जीवन जो जमिल जन-जाता।  
उच्च शिक्षा प्राप्त करने जीवन जो उद्देश्य जन जाता या  
जगी ऐसे अपने दलित जाति अनुवधि के लिए प्रयोग जो  
मतील वन सभी। सिलिया जहारी के ज्ञानार्थ जी विनाश  
सत्य धर्मार्थ है, इसलिया जोना इत्यर्थ सभी जाति-समाज  
स्पर्शी ही यहा है।"

सिलिया अपनी भाँ जी कर्दा सकले जरूर ने लिए  
अर्द्धी वर्ष पहुँच दी है, जिसने नारो ज्ञान जाति जुड़ाया।  
जो मान समाज मिलता है।

०६ वर्ष अपने कुमार दीवा पाहती है। सिलिया ने कहा है, यात्रिशुद्ध, सौभाग्य महारथ जा जो आदि अवस्था नहीं आती है। ०६ आज ५८ लिखने स्थर्यो ने बुल के पांच चारपाँच लिखा है - "किस इसरों नी देहों ५८ भवेह? अपने लिखने को रखा इसरों नी चांतार्थ जा भोहर लक गाता, वंकालिया ५८ चलते हुए जीना नहीं, जगी नहीं। ..."

सिलिया ने अंदर आपत्ति यह आकोश खाते व्यवस्था के आप ही पुरुष मानसिकता ५८ जी एक धूमार ने उठाराधात है। १९८५तः यह इसी गदानी जी समाज व्यवस्था ने प्रत्येक तेवुओं ने अपनायी हुई उसकी अपव्यवस्था जो एक आप ही गदरे में रखा गया था और आदेश ने प्रशासित जी कहती है और इही अपत्ति १०४७-माझे तथा बतला जी उपज है - सिलिया जा अद्यता अहमविवेष। अद्य वह आपत्ति है - "अया हम इन्हें लत्यार हैं, आपसमेवा रहित, दृष्टार्थ अपना जी तो नहीं अहं आप हैं। उन्हें द्वारा जारी है, उन्होंने उनकी जरारत हम उन्हें अरोपी ज्यों १९८७ अपना अवाहन हमें रखा बढ़ावा दी।"

साक्षीप्त २१५ में यह खाते हैं - आधुनिक मुग ने आगमन और लोकतंत्र के विषय के साहित्य में आम लोगों जी परिवर्तियों और मृवृत्तियों के अपने द्वारा लिया। इसके परिणाम १९८७ अस्मिन्द्वारा भास्ति नी नहीं अप्पारणा किया गया हुई, जिसके अंतर्गत दक्षिण आहिय लिए गए। विभिन्न लोकतंत्रों के रूपमें में अपनायी खुपसिद्ध लोकिया राष्ट्रीय जूतों जो गदना हैं।

ये गणतान्यां सामाजिक उद्दलावे लाएं गए आक्षण गते हैं। इन गणतान्यां में आकोश है, आग है, तुम्हारे हैं तो साथ साथ सर्वेदनों, ऐसे और आवश्यकता भी है। आग की डेंगोंट बालकों है, सभावतों जी तीव्र ललन है। माझे चारे जी अपना है। आदर पाने जी इसका उल्लंघन है।"

पलित साहित्य के अंतर्गत और स्वामार्ग ने साहित्य तिर्यकों। सुभीला लोगों की सुभासिद्ध गदानी 'सिलिपा' इसी के अंतर्गत आती है। यह भूख्यतः वर्ष व्याख्या और जाति व्यवस्था जी पुष्टभूमि से उपरी दर्शन वेदना जी गदानी के साथ-साथ पलित विषयाताओं के बीच नारी-पत्ना जी अलिप्यन्ती है, जिसके उसके दुखःभात्ता, पीड़ा, आस्था विप्र और जीवन के साथ ही विद्वान् जी आग जी विद्यमान है अर्थात् यह ज्ञानी वास्तविक अर्थों में पलित जीवन के आवधूर्ण अनुभवों जी भव्यी आलिप्यन्ती है। जिव्यय ही सिलिपा गदानी पलितों जो अपमान और तिर्यकों से भूलती, एवं उनके लिए प्रतिरोध ने यमान्यवाद्य जो गव्ये जी तिर्यकी जा भाती है। सुभीला लोगों की 'सिलिपा' गदानी में भूमि की सामर्थ्य जी भूमि के लिए एवं अंतर्कालीन और आधुनिक समाजिकों जो वित्त लिपा है। यो सभाग के लिए महत्वपूर्ण व प्रेरणाधी है। जिव्यय ही सिलिपा गदानी पलितों जो अपमान और तिर्यकों से भूलती, एवं उनके साहित्य एवं मानवीय भूमि के लिए अपेक्षा बनाता है। सामाजिक घटना जी परिवर्तन जो दिशा दिखानेवाली एवं गदानियों पलितों के लिए वर्ष समाज जी स्थापना करने का प्रयास जो रही है।